सत्यमेव जयते

निदेशालय वार्ता

केंद्रीय हिंदी निदेशालय, नई दिल्ली का बुलेटिन

प्रकाशन वर्ष: 2025 अंक : 1 जनवरी–मार्च 2025

निदेशालय वार्ता 1मुंबई विश्वविद्यालय, में हिंदी साहित्य और कौशल विकास पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

मुंबई विश्वविद्यालय के फिरोजशाह मेहता सभागार में हिंदी विभाग और केंद्रीय हिंदी निदेशालय की 27 से 29 मार्च, 2025 के बीच तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी संपन्न हुई। इस संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए कुलगुरु डॉ. रवीन्द्र कुलकर्णी ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में कौशल विकास को रेखांकित किया। इन्होंने कहा कि हिंदी भाषा और साहित्य के माध्यम से कौशल विकास की बड़ी संभावना है। हमें भाषा और साहित्य को नई तकनीक से जोड़ना होगा। इस अवसर पर केंद्रीय हिंदी निदेशालय के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने कहा कि हम निदेशालय के माध्यम से कौशल विकास के लिए अनेक योजनाएँ चला रहे हैं। इन्होंने मराठी संत कवि तुकाराम के दृष्टांत द्वारा श्रवण कौशल के महत्त्व पर प्रकाश डाला।

संगोष्ठी का आरंभ उपस्थित अतिथियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन और प्रख्यात गायिका डॉ. सुरुचि मोहता की सरस्वती वंदना द्वारा हुआ। हिंदी विभाग के वरिष्ठ प्रोफेसर एवं अध्यक्ष डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कौशल विकास का स्वरूप स्पष्ट किया। आपने वाल्मीकि रामायण में हनुमान-राम के बीच संपन्न वार्ता के माध्यम से संवाद कौशल के आदर्श रूप पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर बीज वक्तव्य देते हुए डॉ. सूर्यप्रसाद दीक्षित ने प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना का संदर्भ देते हुए पाँच सौ प्रकार के कौशल विकास की चर्चा की। इस सत्र में विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. नरेंद्र पाठक, श्रीमती मंजू लोढ़ा, श्री वीरेन्द्र याज्ञिक, मानविकी संकाय के अधिष्ठाता डॉ. अनिल सिंह और निदेशालय के सहायक निदेशक डॉ. दीपक पांडेय उपस्थित थे। इस अवसर पर निदेशालय की पत्रिका भाषा और पुस्तिका हिंदी की मानक वर्तनी का तथा साथ ही वीरेन्द्र याज्ञिक की पुस्तक 'महाभारत का मंतव्य' का लोकार्पण भी संपन्न हुआ। इस सत्र का सफल संचालन डॉ. सचिन गपाट ने किया और डॉ. दत्तात्रय मुरुमकर ने आभार व्यक्त किया।



इसके बाद संगोष्ठी का अगला सत्र हिंदी भाषा, मीडिया, अनुवाद और कौशल विकास पर संपन्न हुआ। इस सत्र की अध्यक्षता पांडिचेरी विश्वविद्यालय के हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. सी.जयशंकर बाबू ने की। इस सत्र में डॉ. संतोष मोटवानी, जी बिज़नेस के कार्यकारी संपादक अमित कुमार दत्ता, डॉ. दयानंद तिवारी, विद्याधर जोग, डॉ. दिनेश पाठक, श्रीमती शाश्वत चटर्जी, सोनल सिंह, वैशाली पाचुंदे और डॉ. इंद्रकुमार विश्वकर्मा ने कौशल विकास के विविध संदर्भों पर अपने विचार व्यक्त किए। इस सत्र का संचालन गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय से पधारीं डॉ. प्रेमलता ने किया और डॉ. सचिन गपाट ने आभार प्रकट किया।

संगोष्ठी के दूसरे दिन प्रात:काल 'हिंदी कविता और कौशल विकास' पर सत्र संपन्न हुआ। इसकी अध्यक्षता महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी के कार्याध्यक्ष डॉ. शीतला प्रसाद दुबे ने की।इस सत्र में डॉ. मिथिलेश शर्मा, डॉ. मीरा सिंह, डॉ. संजय सिंह, डॉ. दिनेश कुमार, डॉ. अजित राय, डॉ. जनक नंदिनी त्रिपाठी, डॉ. कंचन यादव, राजेश दुबे, आनंद शर्मा और ऋचा गायकवाड़ ने अपने वक्तव्य दिए। इस सत्र का संचालन डॉ. हनुमंत धायगुड़े ने किया। भोजनोपरांत अगला सत्र 'हिंदी कथासाहित्य और कौशल विकास' पर संपन्न हुआ। इसकी अध्यक्षता वरिष्ठ निबंधकार डॉ. श्रीराम परिहार ने की। इस सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में गुवाहाटी विश्वविद्यालय की हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. रीतामणि बैश्य उपस्थित थीं। इस सत्र में डॉ. सतीश पांडेय, डॉ. प्रेमलता, डॉ. श्यामसुंदर पांडेय, डॉ. सत्यवती चौबे, डॉ. वेदप्रकाश दुबे एवं डॉ. मेदिनी

अंजनीकर ने अपने विचार रखे। इस सत्र का संचालन डॉ. जनक नंदिनी त्रिपाठी ने किया और डॉ. हनुमंत धायगुडे ने आभार माना।

संगोष्ठी के तीसरे दिन का प्रातःकालीन सत्र ' हिंदी नाटक, सिनेमा, विविध कलाएं और कौशल विकास विषय पर डॉ. जवाहर कर्णावट की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए प्रख्यात अभिनेता अखिलेन्द्र मिश्र ने कहा कि भरतमुनि ने नाट्यशास्त्र में अभिनय कौशल का मानक प्रस्तुत किया है। आज का सिनेमा भी नाटक ही है। इस अवसर पर प्रमुख अतिथि वरिष्ठ पत्रकार और भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता प्रेम शुक्ल ने कहा कि भारत विश्व का सबसे युवा देश है और हम पारंपरिक रूप से कौशलयुक्त राष्ट्र हैं। प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना ने भारतीयों के कौशल को विश्वस्तरीय बनाने का कार्य किया है। इस सत्र



में डॉ. पल्लवी प्रकाश, सुश्री संज्योति सानप, डॉ. भारती सानप, डॉ. मृगेन्द्र राय, डॉ. रामदास तोंडे डॉ. संजय प्रभाकर, डॉ. मनोज कुमार दुबे, नीलम यादव और आशा शेनाय ने कथित विषय पर अपने विचार प्रकट किए। इस सत्र का संचालन श्रीमती मीनू मदान ने किया और डॉ. सुनील वल्वी ने आभार प्रकट किया।

तीसरे दिन भोजनोपरांत महाराष्ट्र के अपर पुलिस महानिदेशक और फोर्स वन के निदेशक कृष्ण प्रकाश की अध्यक्षता में समापन सत्र संपन्न हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में प्रख्यात अंतरिक्ष वैज्ञानिक और भारत वैभव जैसे कालजयी ग्रंथ के लेखक डॉ. ओमप्रकाश पांडेय उपस्थित थे आपने भाषा की उत्पत्ति का अत्यंत मौलिक एवं वैज्ञानिक सिद्धांत देते हुए वैदिक काल से अब तक के कौशल विकास को रेखांकित किया। इस सत्र का संचालन डॉ. सुनील वल्वी ने किया और हिंदी विभाग के वरिष्ठ प्रोफेसर एवं अध्यक्ष डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय ने सभी उपस्थित अतिथियों और गणमान्य लोगों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। संगोष्ठी का समापन प्रख्यात गायिका डॉ. सुरुचि मोहता द्वारा प्रस्तुत राष्ट्रगीत के माध्यम से हुआ। इस संगोष्ठी में भारी संख्या में प्राध्यापक, साहित्यकार, शोधार्थी और विद्यार्थी उपस्थित थे।

हैदराबाद में 'अनुवाद :बदलते परिप्रेक्ष्य, उभरती संभावनाएँ' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी संपन्न



हिंदी विभाग उस्मानिया विश्वविद्यालय, हिंदी विभाग विवेकानंद शासकीय विद्यानगर एवं हिंदी विभाग शासकीय महाविद्यालय सीताफलमंडी द्वारा केंद्रीय हिंदी निदेशालय, भारत सरकार नई दिल्ली, एवं हिंदी अकादमी, हैदराबाद, तेलंगाना राज्य सरकार के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित त्रिदिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन 8 जनवरी 2025 को हुआ। शासकीय महाविद्यालय सीताफलमंडी के प्राचार्य प्रो. एम्. रामचन्द्रम ने उद्घाटन स्वागत वक्तव्य दिया। विवेकानंद शासकीय महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. के प्रभु ने संगोष्ठी की आवश्यकता पर बात की।

सत्र के मुख्य अतिथि प्रो. जी यादगिरि, संयुक्त निदेशक सीसीई, सम्मानीय अतिथि प्रो. राजेन्द्र सिंह संयुक्त निदेशक, सीसीई, तेलंगाना, प्रो. बालभास्कर, एजीवो सीसीई, प्रो. सी कासिम, प्राचार्य आर्ट्स कॉलेज उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद, प्रो. सर्राजू, शासी परिषद सदस्य, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा, प्रो. नानासाहेब यशवंतराव गोरे, अध्यक्ष, हिंदी विभाग एवं अनुसंधान केंद्र, जेईएस विद्यालय, महाराष्ट्र प्रो. ऋषभदेव शर्मा, परामशी मानु ने दीप प्रज्वलन के साथ कार्यक्रम आरंभ किया। सम्मानित अतिथियों ने अनुवाद विषय की आवश्यकता एवं विभिन्न शैक्षणिक संस्थाओं के इस तरह के आपसी सहयोग की महत्ता को रेखांकित किया। हिंदी विभागाध्यक्ष, उस्मानिया विश्वविद्यालय, प्रो. माया देवी ने संगोष्ठी की प्रस्तावना रखी। उद्घाटन सत्र में कुछ अनूदित पुस्तकों तथा पत्रिकाओं ('साहित्य सेतु') का लोकार्पण हुआ। प्रो. तुम्मला रामकृष्णा जी (सेवानिवृत्त वि. सि द्रविड विश्वविद्यालय) की तेलुगु पुस्तक 'मट्टि पोय्यि' के हिंदी अनुवाद का विमोचन किया गया। इसके साथ ही डॉ. सुरभिदत्त तथा डॉ. देवा प्रसाद मायला की पुस्तकों का लोकार्पण भी हुआ। उपस्थित प्रसिद्ध अनुवादकों डॉ. टी वसंता, प्रो. गोपाल शर्मा, डॉ. सुमनलता, डॉ. लक्ष्मी भारती, तथा डॉ.टी श्रीलक्ष्मी का सम्मान भी किया गया। प्रख्यात तेलुगु कवि श्री निखिलेश्वर जी (साहित्य अकादमी पुरस्कृत 2020) एवं युवा लेखक रमेश कार्तिक (साहित्य अकादमी पुरस्कृत 2024) का भी चिह्न और शॉल देकर सम्मानित किया गया। डॉ. सी कामेश्वरी जी ने उद्घाटन सत्र का सफलतापूर्वक संचालन किया। डॉ. अनुपमा, संगोष्ठी संयोजिका ने धन्यवाद ज्ञापन दिया। आगामी कई सत्रों में अनुवाद विषय पर व्यापक चर्चा हुई।

द्वितीय सत्र में डॉ. ऋषभदेव शर्मा ने बीज वक्तव्य दिया। इस सत्र के मुख्य अतिथि, प्रो. सुनील बाबूराव कुळकर्णी, निदेशक, केंद्रीय हिंदी निदेशालय, नई दिल्ली ने केंद्र सरकार द्वारा अनुवाद के क्षेत्र में उठाए जा रहे कदमों से अवगत कराया और कई महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ भी दीं। दूसरे दिन के तृतीय सत्र में प्रो. नानासाहेब यशवंत राव गोरे जी



की अध्यक्षता में एक चर्चा-परिचर्चा कार्यक्रम रखा गया जिसके लिए श्रोताओं से सराहना भी प्राप्त हुई। श्री होमनिधि शर्मा, श्री एफ.एम. सलीम. श्री वैकटेशवर राव, एवं श्री पंकज मेहता ने इस सार्थक परिचर्चा से श्रोताओं का ज्ञानवर्धन किया। तीसरे सत्र में आभासी मंच द्वारा विदेश के विद्वानो से जुड़ने और सुनने का मौका मिला। इसमें डॉ. विकास सिंह जी बेजींग विश्वविद्यालय, चीन से जुड़े डॉ. मुहम्मद रशीद इस्तानबुल विश्वविद्याल टर्की से तथा श्रीमती अनु बाफना दुबाई से जुड़ीं। चतुर्थ सत्र मे विभिन्न विषयों पर प्रपत्र पढ़े गए। पाँचवे सत्र में एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें श्री राजेन्द्र प्रसाद वर्मा, उप निदेशक, भारत सरकार द्वारा यांत्रित भाषा अनुवाद की जानकारी दी गई। छठे सत्र में देश और राज्य के विभिन्न प्रांतो से आए हुए लेखकों ने संगोष्ठी के विषय पर प्रपत्र वाचन किया। डॉ. संगीता व्यास, बीओएस हिंदी विभाग, उस्मानिया विश्वविद्यालय, प्रो. श्यामराव राठोड़, हिन्दी विभाग, इफ्लू, प्रो. चंद्रा मुखर्जी, प्राचार्य, इंदिराप्रियदर्शिनी शासकीय महिला महाविद्यालय, नामपल्ली ने इन सत्रों की अध्यक्षता की। संगोष्ठी के माध्यम से अनुवाद को केंद्र में रखकर, आज के परिवेश में इस विषय में हो रहे विभिन्न परिवर्तनों को जानने की कोशिश की गई। जिन क्षेत्रों में अनुवाद का निरंतर प्रयोग होता है, उन क्षेत्रों के विशेषज्ञों द्वारा चर्चा का आयोजन अत्यंत सफल रहा। अनुवाद पर आयोजित कार्यशाला भी अत्यंत सफल रही। तीन दिन की इस संगोष्ठी में प्रति दिन लगभग सौ से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया। देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों, राज्य के विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं शासकीय महाविद्यालयों एवं अन्य महाविद्यालयों से आए अनेक आचार्यों ने पचास से अधिक शोधपत्रों की प्रस्तुति की। हैदराबाद विश्वविद्यालय, उस्मानिया विश्वविद्यालय एवं अंग्रेजी एवं विदेशी भाषा विश्वविद्यालय (इफ्लू) से कुल 11 शोधार्थियों ने प्रपत्र प्रस्तुत किए।



इस संगोष्ठी के समापन सत्र की अध्यक्षता प्रो. सी कासिम, प्राचार्य, आर्ट्स कॉलेज उस्मानिया विश्वविद्यालय ने की। केंद्रीय हिंदी निदेशालय के उप निदेशक, श्री हुकमचंद मीना ने निदेशालय की विभिन्न योजनाओं के बारे में जानकारी प्रदान की। प्रो. माया देवी हिंदी विभागाध्यक्ष, उस्मानिया विश्वविद्यालय एवं प्रो. संगीता व्यास, बी ओ एस, हिंदी विभाग ने संगोष्ठी की सफलता एवं कार्यक्रम के आयोजन का विवरण प्रस्तुत किया। संगोष्ठी संयोजिका डॉ. अनुपमा ने संगोष्ठी का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। प्राचार्य प्रो. रामचन्द्रम तथा प्राचार्य प्रो. के प्रभु ने संगोष्ठी की उपलब्धियों को रेखांकित किया। कार्यक्रम में प्रपत्र वाचन करने वाली प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र दिए गए। डॉ. प्रवीन राजू, जे एल हिंदी, जी.डी.सी. मलकपेट ने धन्यवाद ज्ञापन किया।



प्रधान संपादकीय



विकास के पथ की ओर अग्रसर हिंदी

नए वर्ष में केंद्रीय हिंदी निदेशालय अपनी स्थापना के पैंसठवें वर्ष में प्रवेश कर गया। गुजरते समय के साथ ही निदेशालय हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार के प्रति प्रतिबद्ध होकर अखिल भारतीय स्तर पर उसकी स्वीकार्यता को सुनिश्चित करते हुए तथा जन-जन में विशेषकर हिंदीतरभाषी प्रांतों में हिंदी भाषा और साहित्य के उपयोग को बढ़ावा देने हेतु पूरी मजबूती के साथ लगातार अपने कदम आगे की ओर बढ़ा रहा है।

'निदेशालय वार्ता' नामक इस तिमाही बुलेटिन का यह प्रवेशांक है। उल्लेखनीय है कि निदेशालय वर्षभर में अपनी विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत समूचे भारत को भाषायी रूप से सभी को आपसी एकता के सूत्र में बाँधने के क्रम में कई कार्यक्रमों का आयोजन करता है,किंतु देखा गया कि वर्षभर आयोजित होनेवाले इन कार्यक्रमों के दस्तावेजीकरण की कोई सुविधा निदेशालय में उपलब्ध नहीं थी। हालाँकि निदेशालय की वेबसाइट के जरिए इन आयोजनों की सूचना हिंदीप्रेमियों तक पहुँचाने की कोशिश किए जाने की कोशिश होती रही किंतु इस प्रयास में आशातीत सफलता नहीं मिली। ऐसे में **'निदेशालय वार्ता'** (त्रैमासिक) की आवश्यकता महसूस हुई।मुझे आशा है कि इस बुलेटिन के डिजिटल प्रकाशन से लाभान्वित होकर आप सभी पाठकबंधु और विद्वान निदेशालय की गतिविधियों से लगातार रूबरू होते रहेंगे।

कहना न होगा कि पिछले तीन माह के अंतर्गत निदेशालय ने अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया तथा कई महत्त्वपूर्ण कोशों इत्यादि का प्रकाशन किया।इस दौरान हिंदी वर्तनी के मानकीकरण पुस्तिका के संशोधित अंक का पुनर्मुद्रण हमारी विशिष्ट उपलब्धि रही। इसके अलावा हैदराबाद, पश्चिम बंगाल, नागालैंड, महाराष्ट्र,गुजरात,मुंबई में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठियों तथा आंध्रप्रदेश,असम में आयोजित हिंदीतरभाषी हिंदी नवलेखक शिविरों ने अपनी विशिष्ट छाप छोड़ी। निदेशालय की विस्तार योजना के तहत कई शोधार्थियों को शोध छात्र यात्रा अनुदान भी प्रदान किया गया। जनवरी माह के दौरान नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले में निदेशालय द्वारा प्रकाशित 'भाषा'पत्रिका के रामदरश मिश्र जन्मशती विशेषांक की स्वयं पद्मश्री रामदरश मिश्र जी की उपस्थिति में हुए लोकार्पण तथा 'हिंदी साहित्य के माध्यम से विविध कौशलों का विकास' विषयक आयोजित परिचर्चा ने मेले में पधारे पुस्तक प्रेमियों को विशेष रूप से ध्यानाकर्षित किया। वहीं मातृभाषा दिवस तथा महिला दिवस के भव्य आयोजन ने भी निदेशालय की उपलब्धियों में चार चाँद लगा दिया। इसी तिमाही में केंद्रीय अनुदान समिति की वार्षिक बैठक का आयोजन किया गया और लंबे समय से लंबित हिंदी भाषा के लिए काम कर रही स्वैच्छिक हिंदी संस्थाओं को वित्तीय सहायता अनुदान भी जारी किया गया। वहीं दूसरी तरफ निदेशालय की समस्त गतिविधियों, कार्यक्रमों तथा योजनाओं की जानकारी प्रदान करने के उद्देश्य से कार्यालय परिसर में निदेशालय पर आधारित वृत्तचित्र का

निर्माण-कार्य भी संपन्न हुआ। इन समस्त गतिविधियों की संक्षिप्त रिपोर्ट आपको इस बुलेटिन में सहजता से मिल जाएगी।

आनेवाला समय हिंदी और समस्त भारतीय भाषाओं का है। हिंदी के अलावा आज अन्य भारतीय भाषाओं में भी विपुल साहित्य रचा जा रहा है। यही कारण है कि भारत सरकार ने कई भारतीय भाषाओं को शास्त्रीय भाषा के रूप में मान्यता प्रदान की है। हिंदी निदेशालय भी उन समस्त भारतीय भाषाओं में रचे साहित्य को हिंदी में अनूदित कर 'भाषा' पत्रिका के अलग-अलग अंकों में लगातार प्रकाशित कर रहा है ताकि भाषायी सौहार्द और सद्भाव बना रहे। दूसरी तरफ निदेशालय हिंदीतरभाषी हिंदी नवलेखक शिविरों के माध्यम से नई शिक्षा नीति में वर्णित सीखने और रचने के नवाचार की नवीन पद्धतियों से शिविरार्थियों को भी परिचित करवा रहा है। आज के इस नए भारत में देश की समृद्ध तथा गौरवशाली ज्ञान परंपरा से नई पीढ़ी को जोड़ने की विशेष पहल की जा रही है ताकि अतीत से प्रेरित होकर हमारे युवा विकसित भारत के सपने को साकार कर सकें। निदेशालय द्वारा प्रकाशित विभिन्न कोश हिंदी के भाषायी ज्ञान के जरिए हमारी संस्कृति में निहित प्रगतिशील तत्वों के जरिए भारत का भविष्य गढ़ने वाले युवाओं को दिशानिर्देशित करने का महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं। निदेशालय द्वारा डिजिटली तैयार किए जा रहे गृह मंत्रालय की महत्वाकांक्षी परियोजना 'हिंदी शब्द सिंधु कोश' इसी का अगला चरण है। आनेवाला समय कौशल और आधुनिक तकनीक का है। अतएव इससे सभी का परिचित होना भी आवश्यक है। इसी को दृष्टिगत रखते हुए केंद्रीय हिंदी निदेशालय कौशल विकास को साहित्य से जोड़ते हुए इस विषय पर आधारित कई संगोष्ठियों का आयोजन कर रहा है। इसका लक्ष्य है कि साहित्य-ज्ञान के जरिए उन कौशलों को भी विकसित किए जाने का प्रयास किया जाए जो साहित्य की अलग-अलग धाराओं में अंतर्निहित हैं। साहित्य की इन प्रवृत्तियों का ज्ञान न केवल उन्हें भाषायी रूप से सक्षम बनाएगा बल्कि नई चुनौतियों और समस्याओं से निपटने के काबिल भी बनाएगा।

यह आवश्यक है कि भाषायी रूप से भी भारत सशक्त हो। जबतक भारत भाषायी रूप से सशक्त नहीं होगा तब तक सभी भारतवासियों को एक सूत्र में बाँधने तथा उन्हें एक साथ लेकर विकास के पथ पर आगे बढ़ने में कठिनाई आएगी। यह आवश्यक है कि अलग-अलग भाषाओं के बीच हिंदी एक सेतु की तरह काम करे तथा उन्हें भी समाज की मुख्यधारा में लाने का प्रयास करे जो किसी कारण पीछे रह गए हैं। यह तभी संभव होगा जब हमारे बीच भाषायी आवाजाही बढ़ेगी तथा हम विविध भाषा में रचे साहित्य के जरिए एक दूसरे से जुड़ेंगे। राष्ट्रीय एकता का महत् संकल्प भी तभी पूरा हो सकेगा। केंद्रीय हिंदी निदेशालय इस दिशा में लगातार प्रयासरत है। हिंदी को मजबूत करते हुए तथा समस्त भारतीय भाषाओं को साथ लेकर चलते हुए केंद्रीय हिंदी निदेशालय एक उज्ज्वल भविष्य के दिशा में आगे बढ़ रहा है। मुझे आशा है कि समय के रथ पर सवार होकर हिंदी वैश्विक जगत की एक प्रमुख आवाज बनकर और मजबूती से उभरेगी तथा समूचे विश्व में 'वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना का प्रसार करेगी। जय हिन्द,जय हिंदी।

– डॉ. सुनील बाबुराव कुळकर्णी, निदेशक



नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले (1 से 9 फरवरी तक आयोजित) में केंद्रीय हिंदी निदेशालय के प्रकाशनों की प्रदर्शनी। साथ में हैं केंद्रीय हिंदी निदेशालय के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी और निदेशालय के अन्य अधिकारी और कर्मचारीगण।



10 से 16 जनवरी 2025 तक गोरखपुर में आयोजित पुस्तक मेले में निदेशालय के प्रकाशनों की प्रदर्शनी। उक्त अवसर पर केंद्रीय हिंदी निदेशालय से डॉ. कृति शर्मा, श्री धर्मवीर और श्री संजीव कुमार मौजूद रहे।



दिनांक 17.03.2025 से 21.03.2025 तक निदेशालय में निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी की अध्यक्षता में हिंदी-व्युत्पत्ति कोश की बैठक आयोजित हुई। बैठक में प्रो. त्रिभुवननाथ शुक्ल,डॉ. भास्करानंद पांडेय,डॉ. नीलांबर पांडेय,प्रो. सुधाकर सिंह, डॉ. जगदीश व्योम, डॉ. मो. कुतबुद्दीन के साथ निदेशालय की ओर से डॉ. अंजू सिंह, सहायक निदेशक, डॉ. नूतन पांडेय,सहायक निदेशक तथा श्री अच्युत कुमार सिंह,सहायक अनुसंधान अधिकारी ने हिस्सा लिया।

दिनांक 18.03.2025 को सचिव एवं संयुक्त सचिव,राजभाषा विभाग,गृह मंत्रालय की अध्यक्षता में हिंदी शब्द सिंधु कोश (डिजिटल) की बैठक आयोजित हुई। इस अवसर पर सचिव एवं संयुक्त सचिव, राजभाषा विभाग,गृह मंत्रालय को केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा प्रकाशित 'भाषा' पत्रिका के जनवरी-फरवरी, 2025 अंक की प्रति भेंट की गई। साथ में हैं निदेशालय से उपनिदेशक श्री एस. श्रीनिवासन, सहायक निदेशक डॉ. नूतन पांडेय, सहायक निदेशक अंजू सिंह, सहायक निदेशक डॉ. किरण झा, सहायक निदेशक शालिनी राजवंशी तथा श्री अच्युत कुमार सिंह,सहायक अनुसंधान अधिकारी।



दिनांक 17.02.2025 से 21.02.2025 तक निदेशालय में संपन्न 'हिंदी-चीनी-अंग्रेजी त्रिभाषा कोश' की बैठक संपन्न हुई । बैठक में चीनी भाषा के विशेषज्ञों डॉ.



अनिर्बान घोष तथा डॉ.विकास कुमार के साथ कोश एकक से डॉ. अंजू सिंह,सहायक निदेशक तथा श्री अच्युत कुमार सिंह,सहायक अनुसंधान अधिकारी।

दिनांक 06.01.2025 से 17.01.2025 तक,10.02.2025 से 21.02.2025 तक तथा 17.03.2025 से 28.03.2025 तक निदेशालय में 'पोलिश हिंदी कोश' की बैठक आयोजित की गई । बैठक में पोलिश विशेषज्ञों श्री सन्नी अरोड़ा,श्री यश राजावत तथा श्री कार्तिक के साथ निदेशालय के अधिकारियों ने हिस्सा लिया ।



दिनांक 17.03.2025 से 21.03.2025 तक मैथिली हिंदी कोश की बैठक आयोजित हुई जिसमें विशेषज्ञों डॉ. गंगेश गुंजन, प्रो. सुमन कुमार झा, डॉ. गोपाल कुमार झा तथा निदेशालय की ओर से सहायक निदेशक डॉ. किरण झा ने हिस्सा लिया।



हिंदी शब्द सिंधु कोश (डिजिटल) के तकनीकी शब्दों की जाँच हेतु दिनांक 27.01.2025 से 31.01.2025 तक आयोजित बैठक वै. त. श. आयोग तथा कें. हिं. नि. के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित की गई जिसमें डॉ. शालिनी राजवंशी ने निदेशालय की ओर से भागीदारी की तथा तकनीकी शब्दों की नमूना जाँच का कार्य संपन्न हुआ।

'भाषा','वार्षिकी' एवं 'साहित्यमाला' ग्रंथ की परामर्श एवं संपादन मंडल की वार्षिक बैठक



'भाषा','वार्षिकी' एवं 'साहित्यमाला' ग्रंथ के प्रकाशन एवं संपादन के संबंध में विचार-विमर्श हेतु परामर्श एवं संपादन मंडल की वार्षिक बैठक दिनांक 03/02/2025 को निदेशालय में संपन्न हुई जिसमें प्रो. श्रीराम परिहार एवं प्रो. विशाला शर्मा बैठक में उपस्थित हुए जबकि प्रो. नरेंद्र मिश्र, प्रो. किरण हजारिका ऑनलाइन माध्यम से उपस्थित रहे।

बैठक में विभिन्न मुद्दों पर विचार-विमर्शोपरांत महत्त्वपूर्ण निर्णय लिए गए जिसमें से 'भाषा' पत्रिका की मूल्यवृद्धि, वर्ष 2025-26 हेतु 'भाषा' पत्रिका के विशेषांक तथा 'साहित्यमाला ग्रंथ' (वर्ष 2026 हेतु) का विषय निर्धारित किया गया। इसके साथ ही निदेशालय द्वारा एक ई-बुकलेट प्रकाशित करने का भी निर्णय लिया गया। उक्त बैठक में प्रधान संपादक 'प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी 'देशगव्हाणकर'', डॉ. अनुपम माथुर, संपादक, डॉ. प्रतिष्ठा श्रीवास्तव एवं श्री प्रदीप कुमार ठाकुर, सह संपादक, अवर श्रेणी लिपिक श्री विक्रांत हुड्डा एवं कार्यालयी व्यवस्था हेतु श्री संजीव कुमार उपस्थित रहे।

रामदरश मिश्र जन्मशती विशेषांक का लोकार्पण और कौशल विकास पर परिचर्चा का आयोजन



प्रगति मैदान में आयोजित 'विश्व पुस्तक मेला' में दिनांक 01.02.2025 को दोपहर 2.00 बजे से 2.45 बजे तक, हॉल सं. 2 में 'लेखक मंच' पर निदेशालय द्वारा "हिंदी साहित्य के माध्यम से विविध कौशलों का विकास" विषय पर विशेष परिचर्चा तथा 'भाषा' पत्रिका के रामदरश मिश्र जन्मशती विशेषांक (नवंबर-दिसंबर 2024) का लोकार्पण स्वयं पद्मश्री डॉ. रामदरश मिश्र के कर-कमलों द्वारा संपन्न हुआ। प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी 'देशगव्हाणकर', निदेशक, केंद्रीय हिंदी निदेशालय, (बीज वक्तव्य) प्रो. सुरेंद्र दुबे, उपाध्यक्ष, केंद्रीय हिंदी संस्थान, प्रो. मिलिंद मराठे, अध्यक्ष, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास (अध्यक्षीय वक्तव्य) एवं डॉ. नूतन पाण्डेय, सहायक निदेशक द्वारा विविध कौशलों पर वक्तव्य प्रस्तुत करने के साथ डॉ. रामदरश मिश्र के दीर्घ साहित्य-कर्तृत्व पर भी प्रकाश डाला गया। कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण रहे मुख्य अतिथि डॉ. रामदरश मिश्र ने अपनी चंद गजलों से समा बांधकर कार्यक्रम को जीवंत एवं यादगार बना दिया।

कार्यक्रम में निदेशालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों सहित मेले में आए साहित्यप्रेमियों नें बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। धन्यवाद ज्ञापन श्री हुकमचंद मीना, उपनिदेशक ने एवं कार्यक्रम का सफल संचालन डॉ. अनुपम माथुर, संपादक (भाषा) ने किया।

केंद्रीय हिंदी निदेशालय की विभिन्न योजनाओं तथा प्रमुख कार्यक्रमों पर केंद्रित वृत्तचित्र का निर्माण



अखिल भारतीय स्तर पर केंद्रीय हिंदी निदेशालय की विभिन्न योजनाओं तथा कार्यक्रमों के प्रचार-प्रसार हेतु पत्राचार पाठ्यक्रम विभाग के अंतर्गत स्टूडियो एकक द्वारा मार्च महीनें में निदेशालय पर केंद्रित वृत्तचित्र तैयार करने के क्रम में मार्च महीनें में शूटिंग करवाई गई। इस शूटिंग में निदेशक समेत सभी योजनाओं तथा कार्यक्रमों से जुड़े अधिकारियों तथा विभागीय कर्मचारियों को भी शामिल किया गया। उक्त योजना के क्रियान्वयन में उपनिदेशक श्री अनिल बी, सहायक निदेशक डॉ. बबीता रानी श्रीवास्तव,श्रीमती अंजू सिंह और श्रीमती पूनम ने प्रमुख भूमिका निभाई।

केंद्रीय अनुदान समिति की वार्षिक बैठक का आयोजन

स्वैच्छिक हिंदी संस्थाओं को वित्तीय सहायता योजना एवं हिंदी में प्रकाशनार्थ वित्तीय सहायता योजना के अंतर्गत वित्त वर्ष 2024-25 हेतु अनुदान प्रस्तावों पर विचार करने हेतु केंद्रीय अनुदान समिति की बैठक का आयोजन दिनांक 21 फरवरी 2025 को शिक्षा मंत्रालय में किया गया। यह बैठक अपर सचिव, शिक्षा मंत्रालय की अध्यक्षता में आयोजित की गई। बैठक के दौरान 85 स्वैच्छिक संस्थाओं के लिए तथा हिंदी में प्रकाशनार्थ 22 पांडुलिपियों के लिए अनुदान स्वीकृत किया गया।

मातृभाषा दिवस का आयोजन



अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर दिनांक 21 फरवरी को निदेशालय में मातृभाषा दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता निदेशक, केंद्रीय हिंदी निदेशालय, प्रो. सुनील बाबूराव कुळकर्णी ने की। श्री हुकमचंद मीना, उपनिदेशक (भाषा) द्वारा विद्वानों का स्वागत किया गया। उक्त कार्यक्रम में श्री जयप्रकाश पाण्डेय (संपादक, साहित्य आज तक),प्रो. के. के. कौशिक (पूर्व प्रोफेसर,हिंदी विभाग,जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली), तथा डॉ. सुभाष चंदर (वरिष्ठ साहित्यकार, गाजियाबाद) विशिष्ट वक्ता के रूप में शामिल हुए। निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने सभी विशेषज्ञों का आभार प्रकट किया तथा मातृभाषा का विकास,सरंक्षण,संवर्धन करने के लिए प्रेरित किया।

इस कार्यक्रम में निदेशालय के श्री एस. श्रीनिवासन, उपनिदेशक (भाषा) ने तमिल भाषा के संत तिरुवलुवर तथा कबीरदास के कृतियों पर,श्रीमती बिंदु पी.वी., सहायक निदेशक (भाषा) ने मलयालम भाषा के समृद्ध साहित्य, लिपि, कला एवं फिल्म पर तथा श्री राकेश ओझा,सहायक अनुसंधान अधिकारी ने भोजपुरी भाषा को संविधान के आठवीं अनुसूची में शामिल करने हेतु प्रयास करने से संबंधित विषय पर अपनी बातें रखीं। कार्यक्रम का संयोजन समन्वय एकक के श्री सुनील कुमार, सहायक अनुसंधान अधिकारी द्वारा किया गया। कार्यक्रम का समापन डॉ. अनुपम माथुर, सहायक निदेशक (भाषा) द्वारा कृतज्ञता ज्ञापन से हुआ।

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन



केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा दिनांक 06.03.2025 को महिला दिवस के अवसर पर काव्यपाठ का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता निदेशक, केंद्रीय हिंदी निदेशालय, प्रो. सुनील बाबूराव कुळकर्णी ने की। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में सुप्रसिद्ध साहित्यकार विदुषी श्रीमती नासिरा शर्मा (नई दिल्ली) उपस्थित रहीं। इस अवसर पर निदेशालय से श्रीमती अर्चना श्रीवास्तव, सहायक निदेशक, डॉ. अनुपम माथुर, सहायक निदेशक, डॉ. कृति शर्मा, सहायक निदेशक, श्री रत्नेश कुमार मिश्र, सहायक निदेशक, श्रीमती सौरभ चौहान, सहायक अनुसंधान अधिकारी, सुश्री तमन्ना रानी,सहायक अनुसंधान अधिकारी, श्री ईश्वर सिंह, सहायक अनुसंधान अधिकारी, सुश्री सुष्मिता, प्र.श्रे.लि.,श्री अच्युत सिंह, सहायक अनुसंधान अधिकारी, श्री प्रदीप ठाकुर, मूल्यांकक तथा डॉ. अनीता डगोरे, उपनिदेशक ने काव्यपाठ में हिस्सा लिया। निदेशक महोदय ने भी एक स्वरचित कविता प्रस्तुत किया। उक्त अवसर पर नासिरा जी नें स्त्री और स्त्रीवादी आलोचना पर महत्त्वपूर्ण बातें रखीं। कार्यक्रम का संयोजन श्री सुनील कुमार, सहायक अनुसंधान अधिकारी द्वारा किया गया। धन्यवाद ज्ञापन श्रीमती सौरभ चौहान,सहायक अनुसंधान अधिकारी ने किया।

आंध्रप्रदेश में हिंदीतरभाषी हिंदी नवलेखक शिविर संपन्न



केंद्रीय हिंदी निदेशालय, उच्चतर शिक्षा विभाग,शिक्षा मंत्रालय, नई दिल्ली तथा संत जोसफ महिला महाविद्यालय, ज्ञानापुरम, विशाखापत्तनम के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 21.03.2025 से 28.03.2025 तक आठदिवसीय हिंदीतरभाषी हिंदी नवलेखक शिविर विशाखापत्तनम में आयोजित की गई।

इस शिविर में महाराष्ट्र और केरल से आए कुल 24 शिविरार्थियों सहित तीन बाहरी विशेषज्ञों डॉ. पुरुषोत्तम पाटिल, सहायक आचार्य, डॉ. रामदास नारायण तोंडे, सहायक आचार्य तथा डॉ. अर्चना झा, सह आचार्य एवं आठ स्थानीय विशेषज्ञों ने भाग लिया।

असम विश्वविद्यालय में आठदिवसीय हिंदीतरभाषी हिंदी नवलेखक शिविर संपन्न

केंद्रीय हिंदी निदेशालय एवं असम विश्वविद्यालय, दीफू परिसर, कार्बी आंगलोंग, असम के हिंदी विभाग के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 03 मार्च 2025 से 10 मार्च 2025 तक की अवधि में आठदिवसीय हिंदीतरभाषी हिंदी नवलेखक शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में बाहरी विषय



विशेषज्ञ के रूप में जे योगानंदम, शासकीय छत्तीसगढ़ स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़ से प्रो. उर्मिला शुक्ल, अप्पासाहेब र.भा. गरूड़ महाविद्यालय शेंदुर्णी जलगाँव, महाराष्ट्र से डॉ. रोहिदास डी. गवारे, गुवाहाटी, असम से संपादक, दैनिक पूर्वोदय, श्री रविशंकर रवि,कॉटन विश्वविद्यालय, गुवाहाटी,असम से डॉ. परिस्मिता बरदोलोई सम्मिलित रहे। वहीं स्थानीय विशेषज्ञ के रूप में नागालैंड विश्वविद्यालय से हिंदी विभागाध्यक्ष, प्रो. मुन्नी चौधरी तथा असम विश्वविद्यालय के हिंदी विभागाध्यक्ष प्रो. शीतांशु, डॉ. प्रमोद रंजन, डॉ. सत्यदेव प्रसाद तथा असमिया विभाग से डॉ. हीरामन्ना दास सम्मिलित रहीं। निदेशक, केंद्रीय हिंदी निदेशालय प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने अपने व्यस्ततम समय में से समय निकालकर शिविरार्थियों को ऑनलाइन माध्यम से सृजनात्मक लेखन में उदात्त भाव पर लेखन हेतु मार्गदर्शन प्रदान किया। केरल विश्वविद्यालय, महाराष्ट्र तथा असम से कुल 50 शिविरार्थियों ने उक्त शिविर में प्रतिभागिता की। शिविर प्रभारी डॉ. किरण झा ने देवनागरी लिपि और हिंदी वर्तनी का मानकीकरण के संबंध में शिविरार्थियों को संबोधित तथा अभ्यास कराया शिवर के स्थानीय समन्वयक प्रो. जय कौशल, हिंदी विभाग, असम विश्वविद्यालय ने कार्यक्रम से जुड़े सभी विशेषज्ञों/ प्रतिभागियों तथा शिविर के आयोजन से जुडे अन्य सभी लोगों का धन्यवाद ज्ञापन किया। शिविर के अंतिम दिन शिविरार्थियों एवं विशेषज्ञों को निदेशालय की तरफ से प्रमाण-पत्र प्रदान किया गया।

हिंदी भाषा और साहित्य के शोधार्थियों के लिए शोध छात्र यात्रा अनुदान कार्यक्रम का आयोजन

हिंदी भाषा और साहित्य में शोधरत शोधार्थियों हेतु शोध छात्र यात्रा अनुदान कार्यक्रम केंद्रीय हिंदी निदेशालय की शोध छात्र यात्रा अनुदान योजना के तहत असम विश्वविद्यालय, दीफू परिसर, असम के हिंदी विभाग में शोधरत कुल तीन शोधार्थियों सुस्मिता बरगोहाई, रूपरेखा पाटगिरी और सपना कुमारी ने फरवरी माह में इस योजना के तहत जवाहरलाल नेहरू, जामिया मिल्लिया इस्लामिया और दिल्ली विश्वविद्यालय के विभागीय पुस्तकालय में उपस्थित होकर अपने शोधविषय से संबंधित सामग्री एकत्र की।







नागालैंड विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय संगोष्ठी

केंद्रीय हिंदी निदेशालय एवं कोहिमा विश्वविद्यालय नागालैंड के संयुक्त तत्वावधान में 'पूर्वोत्तर भारत मे हिंदी' विषयक त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन दिनांक 10-12 फरवरी 2025 तक नागालैंड विश्वविद्यालय में आयोजित किया गया। केंद्रीय हिंदी निदेशालय के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने उद्घाटन सत्र में ऑनलाइन माध्यम से पूर्वोत्तर भारत में हिंदी की स्थिति को और मजबूत करने पर बल दिया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि प्रो भारती गोरे सहित नागालैंड विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो जगदीश कुमार पटनायक, समकुलपति प्रो जी.टी थोंग प्रो, जानो. एस लेगीसेतथा विशेषज्ञों के रूप में डॉ सचिन गपाट, डॉ मिलनरानी जमातिया, डॉ भरत प्रसाद, डॉ चंदना शर्मा,डॉ अभिषेक यादव, डॉ जय कौशल, डॉ अनूप, डॉ बृजेश ने अपने सारगर्भित वक्तव्यों से हिंदी को पूर्वोत्तर भारत में सुदृढ़ करने पर जोर दिया। संगोष्ठी के दौरान कई शोधपत्रों का भी वाचन किया गया। तीन दिवसीय इस संगोष्ठी में छात्र -छात्राओं ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। संगोष्ठी के संयोजक डॉ. मुन्नी चौधरी तथा प्रभारी डॉ. प्रतिष्ठा श्रीवास्तव रहीं।

विश्वभारती,शांतिनिकेतन,पश्चिम बंगाल में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

केंद्रीय हिंदी निदेशालय, नई दिल्ली तथा विश्वभारती, शांतिनिकेतन, बोलपुर, पश्चिम बंगाल के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 30/01/2025 से 31/01/2025 तक विश्वभारती, शांतिनिकेतन के हिंदी भवन के प्रांगण में 'हिंदी साहित्य: रवींद्रनाथ और शांतिनिकेतन का हिंदी भवन' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का भव्य आयोजन किया गया। इन ध्यातव्य है कि इसी वर्ष इस हिंदी भवन की स्थापना के 85 वर्ष भी पूरे हुए हैं।। उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि केंद्रीय हिंदी निदेशालय के प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने हिंदी भाषा और साहित्य के संवर्धन और विकास में निदेशालय की भूमिका पर विस्तार से प्रकाश डाला। इस सत्र के अतिथियों में प्रो. मनोरंजन प्रधान, प्रो. सोमा बंद्योपाध्याय, प्रो. सविता प्रधान, प्रो. रामेश्वर मिश्र आदि थे। स्वागत भाषण हिंदी विभागाध्यक्ष सुभाषचंद्र

राय द्वारा तथा संचालन मुक्तेश्वरनाथ तिवारी द्वारा किया गया।

संगोष्ठी के प्रथम सत्र का विषय 'हिंदी भवन की आचार्य परंपरा' था, जिसमें प्रो. रणजीत साहा, प्रो. अवधेश प्रधान, प्रो. चन्द्रकला पाण्डेय, प्रो. विजय कुमार भारती डॉ. निहारिका सिन्हा रामेश्वर मिश्र, प्रो. सत्यकेतु सांकृत, प्रो. कलानाथ मिश्र आदि वक्ताओं ने गुरुदेव रवींद्रनाथ ठाकुर, क्षितिमोहन सेन, रामसिंह तोमर, हजारीप्रसाद द्विवेदी, सियाराम तिवारी, शिवनाथ सहित प्रमुख आचार्यों के योगदान पर चर्चा की। सत्र का संचालन हिंदी विभाग की डॉ. मेरी हांसादा ने तथा धन्यवाद ज्ञापन हिंदी विभाग के डॉ. अर्जुन कुमार जी ने किया। इस दिन के दूसरे सत्र का विषय 'प्रो. रामसिंह तोमर जन्मशताब्दी समारोह: व्यक्तित्व और कृतित्व' था। इस सत्र में प्रो. रणजीत साहा, प्रो. रामेश्वर मिश्र, प्रो. दामोदर मिश्र, प्रो. अरुण होता, डॉ. कामेश्वर पंकज, प्रो. इंद्राणी दास, श्री जयंत सिंह तोमर, श्री भीमराव खर्राटे प्रमुख वक्ताओं में शामिल थे। सत्र का संचालन हिंदी भवन की आचार्य प्रो. शकुंतला मिश्र जी ने तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. सुभाषचंद्र राय जी ने किया।

संगोष्ठी के आखिरी दिन के पहले सत्र का विषय था-'शांतिनिकेतन का हिंदी भवन और मध्यकालीन



साहित्य चिंतन'। इस सत्र में देश-विदेश के कई विद्वान वक्ताओं ने ऑनलाइन-ऑफलाइन माध्यम से जुड़कर अपने विचार प्रस्तुत किए। इस क्रम में ओडिशा केंद्रीय विश्वविद्यालय, कोरापुट के कुलपति प्रो. चक्रधर त्रिपाठी ने मध्यकालीन साहित्य पर चर्चा करते हुए अपना वक्तव्य दिया कहा कि "अहम, इदं और संगम के महत्व को समझने की आवश्यकता है। 'मैं' और 'समाज' के मिलने से ही मानव समाज एवं राष्ट्र का कल्याण हो सकता है। अब समय की मांग है कि प्रत्येक मनुष्य व्यक्तिवाद से आगे बढ़कर समाज की ओर उन्मुख हो।" केंद्रीय हिंदी निदेशालय के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने भक्तिकाल के प्रदेय को लेकर अपना मौलिक विचार रखा।

कार्यक्रम के दूसरे एवं तीसरे सत्र में क्रमशः' शांतिनिकेतन का हिंदी भवन और आधुनिक साहित्य चिंतन' एवं 'रवींद्रनाथ और हिंदी साहित्य'विषय पर वक्ताओं ने अपने विचार साझा किए। इन दोनों सत्रों में विद्वान वक्ताओं में प्रो. माधव हाड़ा, प्रो. अवधेश प्रधान, प्रो. तनूजा मजूमदार, डॉ. महेंद्र कुशवाहा, प्रो. रवीन्द्रनाथ मिश्र, प्रो. मंजूरानी सिंह, डॉ. लक्ष्मण प्रसाद गुप्ता, डॉ. रामचंद्र राय, डॉ. रामप्रवेश रजक, प्रो. तनूजा मजूमदार, प्रो. सुनील कुमार, प्रो. चक्रधर प्रधान, प्रो. दामोदर मिश्र, प्रो. नरेंद्र मिश्र, प्रो. प्रतिभा मुदलियार, प्रो. सुनील कुमार द्विवेदी, श्री अजय शर्मा शामिल थे। इस दौरान ऑनलाइन माध्यम से कादंबरी आदेश (यूएसए), अशोक कुमार (न्यू जर्सी), डॉ. इमरै बंघा (ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी) आदि विद्वानों ने हिंदी के मध्यकाल को लेकर अपने शोधपरक विचारों सुधी श्रोताओं को मंत्रमुग्ध किया। उक्त संगोष्ठी के समानांतर कई शोधार्थियों ने अपने शोध पत्र भी प्रस्तुत किए। दोनों सत्रों का संचालन तथा धन्यवाद ज्ञापन क्रमशः डॉ. जगदीश भगत, डॉ. अर्जुन कुमार तथा डॉ. श्रुति कुमुद जी ने किया। दो दिवसीय इस संगोष्ठी में हिस्सा लेनेवाले सभी आमंत्रित स्थानीय तथा बाहरी वक्ताओं को निदेशालय की तरफ से प्रमाण-पत्र भी प्रदान किया गया। कार्यक्रम के अंत में हिंदी निदेशालय के अधिकारी श्री प्रदीप कुमार ने सभी वक्ताओं, श्रोताओं, आयोजकों का धन्यवाद ज्ञापन किया। संगोष्ठी की दोनों शाम सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया गया जिसमें छात्रों द्वारा गीत, नृत्य की प्रस्तुति के साथ ही अजय राय का गायन और भानुसिंहर पदावली का मंचन प्रमुख रहा।

भोंसला मिलिट्री कॉलेज, रामभूमि, नासिक में राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

केंद्रीय हिंदी निदेशालय, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार एवं सेंट्रल हिंदू मिलिटरी एज्युकेशन सोसायटी द्वारा संचालित भोंसला मिलिटरी कॉलेज, रामभूमि नासिक के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 3 से 5 मार्च तक 'हिंदी और मराठी साहित्य में अभिव्यक्त सामाजिक एवं सांस्कृतिक समरसता'विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी के उद्घाटन-सत्र के अध्यक्ष सावित्रीबाई फुले, पुणे विश्वविद्यालय के श्री. रवींद्र शिंगणापुरकर जी थे। उद्घाटक के रूप में केंद्रीय हिंदी निदेशालय, नई दिल्ली के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी और बीजभाषक के रूप में माननीय पद्मश्री भीकूजी इदाते, प्रमुख अतिथि के रूप में माननीय डॉ. नारायण शर्मा, माननीय डॉ. जोगिंदरसिंह बिसेनजी और संस्था के मान्यवर पदाधिकारी भी उपस्थित थे। कार्यक्रम की प्रस्तावना महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. दिनेश नाईकने की। माननीय प्रो. सुनील कुळकर्णी ने उद्घाटन सत्र में सांस्कृतिक और सामाजिक समरसता का महत्त्व समझाते हुए राष्ट्रीय स्तर पर इस विषय पर विचार मंथन की आवश्यकताको रेखांकित किया। बीजभाषक पद्मश्री इदातेजी ने यहा कहा कि सामाजिक समरसता तभी संभव है जब इंसान के अंदर इंसानियत जिंदा रहेगी। रविंद्र शिंगणापुरकरजी ने यह स्पष्ट किया कि सामाजिक और सांस्कृतिक समरसता देश के विकास के लिए कितनी लाभदायक है। प्रमुख अतिथि डॉ. नारायण शर्मा तथा विशेष अतिथि डॉ. जोगिंदर सिंह बिसेन ने जाति-भेद, आर्थिक और सामाजिक विषमता से समाज में बढ़ती असंतोष की भावना को स्पष्ट करते हुए सांस्कृतिक और सामाजिक समरसता पर प्रकाश डाला।

पहले दिन के प्रथम सत्र की अध्यक्षता शोभाताई पैठणकर ने की। अन्य वक्ताओं में डॉ. संदीप रणबीरकर (कर्नाटक) श्री. रमेश पांडव (नागपुर) रहे जिन्होंने अपने वक्तव्य के माध्यम से सांस्कृतिक एवं सामाजिक समरसता को स्पष्ट किया। द्वितीय सत्र का विषय'हिंदी तथा मराठी संत साहित्य में अभिव्यक्त सामाजिक एवं सांस्कृतिक समरसता' था। इसके सत्राध्यक्ष डॉ. रविंद्र गोले थे। अन्य प्रमुख वक्ताओं में डॉ. नवीन नंदवाना



(राजस्थान), डॉ. विशाल शर्मा, डॉ. सुरेश मुंडे (छत्रपति संभाजीनगर) ने अपने विचार व्यक्त किए। इस सत्र के वक्ताओं ने महान संत कबीर, मीराबाई, तुकाराम, नामदेव, मुक्ताई, चोखामेळा, ज्ञानेश्वरजी ने अपने अभंग और दोहों के माध्यम से किस प्रकार की सामाजिक एवं सांस्कृतिक एकात्मता के लिए के लिए प्रयास किया, इस पर प्रकाश डाला।

दूसरे दिन के प्रथम सत्र का विषय'आधुनिक हिंदी तथा मराठी गद्य साहित्य में अभिव्यक्त सामाजिक एवं सांस्कृतिक समरसता' था। सत्राअध्यक्ष श्री. रवि किरकोल (पुणे) तथा अन्य वक्ताओं में प्रवक्ता डॉ. भास्कर ढोके (नासिक) डॉ. आनंद काटीकर (पुणे) डॉ. रामदास तोंडे (मुंबई) शामिल थे। वक्ताओं ने समरसता के माध्यम से देश एकात्मता के सूत्र में कैसे बन बँध सकता है यह स्पष्ट किया। दूसरे दिन काचतुर्थ सत्र 'आधुनिक हिंदी तथा मराठी पद्य साहित्य में अभिव्यक्त सामाजिक एवं सांस्कृतिक समरसता' पर केंद्रित था। इस सत्र के सत्राध्यक्ष प्रोफेसर सर्राजू (हैदराबाद) रहे। डॉ. आशुतोष अडोणी (नागपुर) तथा डॉ. पूनम कुमारी (दिल्ली) अपने विचार व्यक्त किए इस सत्र में आदिवासी संस्कृति के माध्यम से पर्यावरणीय समरसता के साथ सांस्कृतिक समरसता को सामने रखते हुए स्त्री-पुरुष समानता पर चर्चा की गई। पंचम सत्र 'हिंदी तथा मराठी आलोचना साहित्य में अभिव्यक्त सामाजिक एवं सांस्कृतिक समरसता' विषय पर केंद्रित था। इस सत्र में सत्राध्यक्ष श्री. निलेश गद्रे (पुणे) के अलावा प्रमुख वक्ताओं में प्रवक्ता डॉ. तुषार चांदवडकर (चांदवड), डॉ. विजयप्रसाद अवस्थी (नासिक) शामिल थे।

अंतिम दिन का विषय 'हिंदी तथा मराठी लोकसाहित्य में अभिव्यक्त सामाजिक एवं सांस्कृतिक समरसता' था। इस सत्र की अध्यक्षता डॉ. महेंद्र ठाकुरदास (पुणे) ने की, अन्य वक्ताओं में डॉ. विजयकुमार रोडे (पुणे) तथा डॉ. राजेंद्र सांगळे (नासिक) भी शामिल रहे। इस सत्र में डॉ. ठाकुरदास और डॉ. राजेंद्र सांगळेजी ने बहुत ही सुंदर तरीके से शादी के समय के गाने जाने वाले गीत, होली के गीत, सास बहू की नोंक-झोंक के गीतों का विश्लेषण करते हुए पर विचार व्यक्त किया।सातवें सत्र का विषय'हिंदी तथा मराठी साहित्य में अभिव्यक्त सामाजिक एवं सांस्कृतिक समरसता का तुलनात्मक अध्ययन' था। इस सत्र के सत्राध्यक्ष डॉ. अनंत केदारे थे।अन्य विशिष्ट वक्ताओं में डॉ. नानासाहेब गोरे (जालना), डॉ. विजय राठौड़ (नागपुर) शामिल रहे।

समापन सत्र के प्रमुख अतिथि दिल्ली विश्वविद्यालय के सीनियर प्रोफेसर डॉ. निरंजनकुमार तथा वक्त श्री. हेमंत देशपांडे और डॉ. बालकृष्ण मुंजेजी थे सत्र में आभार प्रदर्शन अध्यक्ष डॉ. विजय प्रसाद अवस्थी जी ने किया। इस में तीन दिवसीय संगोष्ठी के केंद्रीय हिंदी निदेशालय के संगोष्ठी प्रभारी के रूप में माननीय श्री. हुकुमचंद मीनाजी ने और महाविद्यालय की ओर से संगोष्ठी संयोजक के रूप में प्राध्यापिका पूर्णिमा झेंडे और डॉ. प्रमोद पवार ने कार्यभार विशेष भूमिका का निर्वहन किया।

सरदार पटेल विश्वविद्यालय, गुजरात में तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित

'भारतीय ज्ञान परंपरा: साहित्य, संस्कृति और राष्ट्र' विषयक त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन दिनांक 7 मार्च से 9 मार्च, 2025 तक सरदार पटेल विश्वविद्यालय, गुजरात में हुआ। इस संगोष्ठी में देशभर के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों के आचार्य एवं विद्वत्तजन उपस्थित रहे। संगोष्ठी का आरंभ विश्वविद्यालय कुलगीत एवं प्रो. दिलीप मेहरा जी के स्वागत से हुआ। सरदार पटेल विश्वविद्यालय के कुलपतिश्री प्रो. निरंजनभाई पटेल जी अध्यक्षता में केंद्रीय हिंदी निदेशालय, दिल्ली के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने संगोष्ठी का उद्घाटन किया। उद्घाटन सत्र में बीज वक्ता के रूप में उत्तरप्रदेश के पूर्व शिक्षा मंत्री एवं वरिष्ठ साहित्यकार और 'हिंदी साहित्य भारती' के अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. रवीन्द्र शुक्ल जी ने भारतीय ज्ञान परंपरा पर विस्तृत व्याख्यान दिया। साथ ही अम्बेडकर विश्वविद्यालय दिल्ली के अधिष्ठाता एवं हिंदी विभाग के आचार्य एवं अध्यक्ष प्रो. सत्यकेतु सांकृत जी ने भारतीय ज्ञान परंपरा को साहित्य, संस्कृति और राष्ट्र से जोड़ते हुए विशेष व्याख्यान दिया। संगोष्ठी के प्रथम दिवस के अन्य सत्रों में गुजरात एवं अन्य राज्यों से आए विषय विशेषज्ञों ने अपने वक्तव्य दिए जिनमें रीतामणि वैश्य (अध्यक्ष, हिंदी विभाग, गोहाटी विश्वविद्यालय), प्रो. योगेश गोकुल पाटिल (धुले, महाराष्ट्र), डॉ. एन. लक्ष्मी (अंडमान), प्रो. अलका पांडे (लखनऊ विश्वविद्यालय), प्रो. आर.के. मंडलिया (सेवानिवृत्त आचार्य एवं अध्यक्ष, अंग्रेजी विभाग, सरदार पटेल विश्वविद्यालय), डॉ. दिलीपभाई पटेल (आनंद एजुकेशनल कॉलेज), और प्रो. सुनील कुलकर्णी जी ने अपने विशेष वक्तव्यों से संगोष्ठी के प्रथम दिवस को सफल बनाया। संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र का संचालन कुलदीप आशकिरण एवं अन्य सत्रों का संचालन अनामिका कौशल और विमल चौधरी ने किया।

संगोष्ठी का द्वितीय दिवस (08 मार्च, 2025) एवं तृतीय सत्र में सत्राध्यक्ष के रूप में प्रो. दीपेन्द्र जाडेजा जी (आचार्य, हिंदी विभाग, म. स. विश्वविद्यालय, बड़ौदा) एवं विषय विशेषज्ञ प्रो. महेंद्र नाई जी (आचार्य, गुजराती विभाग, सरदार पटेल विश्वविद्यालय), डॉ. उपेंद्र सिंह चंदेल जी (अध्यक्ष हिंदी विभाग, आर्ट्स एंड कॉमर्स कॉलेज, बालासिनोर), डॉ. राजेश राढ़वा जी (सहायक आचार्य, हिंदी विभाग, श्री गुरू गोबिंद विश्वविद्यालय, गोधरा), डॉ. नीवा रिद्धेध्देश जोशी जी (साहित्यकार, अहमदाबाद) नेविशेष सराहनीय वक्तव्य दिए।

संगोष्ठी के चतुर्थ एवं पंचम सत्र में डॉ. रवींद्र शुक्ल जी (वरिष्ठ साहित्यकार एवं पूर्व शिक्षा मंत्री उत्तर प्रदेश), डॉ. राजेन्द्र परमार जी(सहायक आचार्य, गुजरात विश्वविद्यालय, अहमदाबाद) श्री प्रताप सिंह डाभी 'हॉकल' जी (साहित्यकार, अहमदाबाद),



प्रो. वी. के. सुब्रह्मण्यम् जी (आचार्य एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, कालीकट विश्वविद्यालय, केरल), प्रो. रामपाल शुक्ल जी (आचार्य, संस्कृत विभाग, मॅ. स. विश्वविद्यालय, बड़ौदा), डॉ. तरुण मेहता जी (महुवा, भावनगर), श्री अरविंद ब्रम्हभट्ट जी (बड़ौदा), डॉ. योगेंद्रनाथ मिश्र जी (प्रसिद्ध भाषा वैज्ञानिक, गुजरात), महर्षि शैलेश्वर स्वामी जी (मेडिटेशन आश्रम, बड़ौदा) आदि ने अपने विशेष वक्तव्यों से संगोष्ठी में रसामृत घोल दिया जिससे विद्यार्थी, शोधार्थी और अध्यापक सभी लाभान्वित हुए। द्वितीय दिवस के सभी सत्रों का संचालन कुलदीप आशकिरण, विकास मिश्र, एवं विमल चौधरी ने किया।

संगोष्ठी का तृतीय एवं समापन दिवस (9 मार्च, 2025) षष्टम् सत्र एवं सप्तम सत्र में सत्राध्यक्ष के रूप में प्रो. सत्यकेतु सांकृत जी तथा विषय विशेषज्ञ प्रो. महेश याज्ञिक जी (पूर्व आचार्य, सरदार पटेल विश्वविद्यालय) प्रो. योगेश गोकुल पाटिल जी डॉ. पंकज लोचन सहाय जी (साहित्यकार, गुजरात), डॉ. संगीता चौहान जी (प्राध्यापिका, नलिनी अरविंद आर्ट्स कॉलेज), डॉ. अनिला मिश्रा जी (प्राध्यापिका, हिन्दी विभाग, सरदार पटेल विश्वविद्यालय) डॉ. शिल्पा कामालिया जी (विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, नलिनी अरविंद आर्ट्स कॉलेज) आदि ने अपने वक्तव्यों से विद्यार्थी, शोधार्थी एवं अध्यापकों को लाभान्वित किया। संगोष्ठी के समापन सत्र में गुरुमैया डॉ. हरेश्वरी देवीजी ने आशीर्वचन के साथ संगोष्ठी समापन की घोषणा की और अंत में केंद्रीय हिंदी निदेशालय की प्रभारी डॉ. बबीता रानी श्रीवास्तव जी ने आभार प्रकट करते हुए निदेशालय की खूबियों से अवगत कराया। उपस्थित विद्वत्तजनों द्वारा सभी प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र प्रदान किया गया।

साक्षात्कार
कवि-उपन्यासकार शिवदयाल से रत्नेश मिश्र सहायक निदेशक की बातचीत

रत्नेश मिश्र- आपके लेखन का फलक विविधवर्णी है। आपके अपने विचार में आपको प्राथमिक रूप में कैसे देखा जाना चाहिए? एक संवेदनशील कवि-उपन्यासकार या एक सामाजिक-राजनीतिक चिंतक?

शिवदयाल- विधा को लेकर मेरे अंदर कभी कोई निरुद्ध भाव नहीं रहा। बहुमुखता मेरा मूल स्वभाव है और अनेक विधाओं में लिखकर दरअसल मैं अपने इस स्वभाव, इस मूल वृत्ति का संरक्षण ही करता हूँ। बहुत कम उम्र में आंदोलन में शामिल होने से मेरे व्यक्ति और रचनाकार का विकास जरूर कुछ अलग ढंग से हुआ होगा। सामाजिक-राजनीतिक-सांस्कृतिक विषयों पर मैं विचार करता ही रहा हूँ। सृजनात्मक और वैचारिक लेखन साथ-साथ चलता रहा है। कह सकते हैं कि संवेदना और विचार की यात्रा मेरे अंदर साथ-साथ चलती रही है। इस प्रश्न का उत्तर कठिन है कि मैं किस रूप में जाना जाऊँ । यह सहृदय पाठकों पर छोड़ता हूँ।

रत्नेश मिश्र- लेखन का इतना लंबा कालखंड बीतने के बाद पहला काव्य-संग्रह 'ताक पर दुनिया' वर्ष 2024 में आता है जबकि कविताएँ आप बहुत पहले से लिख रहे हैं। कोई विशेष कारण जो आप उल्लेखनीय समझते हों?

शिवदयाल - मेरी पहली रचना कविता ही थी और यह सच है कि कविता मैं निरंतरता में लिखता रहा हूँ, भले ही बहुत ज्यादा नहीं लिखी हो। लेकिन पहला संग्रह 'ताक पर दुनिया' पिछले वर्ष 2024 में आया जबकि इस बीच अनेक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी थीं। इसके पीछे एक तो कारण यह है कि मैं कविताओं को लेकर बहुत 'चूजी' रहा हूँ, कोई भी कविता अगर संग्रह में जाऐ तो वह मेरी श्रेष्ठ रचना हो, इसका मन ही मन आग्रह रहा है। दूसरी बात यह कि मेरा गद्य लेखन में बहुत मन रमा और जब किताबों को प्रकाशित करवाने की बारी आई तो मेरा ध्यान गद्य पुस्तकों की तरफ ज्यादा गया, कविता पीछे रह गई। कविता मेरे लिए आत्म-संवाद की तरह रही है, यह भी एक कारण रहा हो शायद कि कविता पुस्तक के प्रति वैसी तत्परता न रही हो।

रत्नेश मिश्र- आपकी कविताओं में स्त्री-विमर्श का एक नया ढब दिखाई देता है। आपको लगता है कि आगे बढ़ती मीनू मैम जैसी स्त्री भावनात्मक स्तर पर अकेली पड़ती जा रही है?

शिवदयाल - जीवन है तो स्त्री है। स्त्री-अस्तित्व हमारे जीवन से अविच्छिन्न, अविभाज्य और अंगभूत है। हमारे जीवन के सबसे अमूल्य भाव - प्रेम, ममत्व, करुणा के पीछे स्त्री ही है। वह अलग से विमर्श का विषय हो, यह बात, सच पूछिए तो अस्वाभाविक-सी लगती है। लेकिन दुनिया जिस तरह से बनती गई, उसमें उसका भाग सिमटता चला गया। वह अपनी ही, यानी पुरुष की, पूरक शारीरिक प्रतिकृति है लेकिन इसी आधार पर वह एक द्रोह-भाव और भोग-दृष्टि का शिकार होती गई है। मीनू का मीनू मैम बनना इस दृष्टि से एक बड़ी और महत्वपूर्ण घटना है। उसपर दोहरा दबाव है, भावनात्मक रूप से वह अकेली पड़ती हो सकती है।



रत्नेश- हिंदी साहित्य में कविता की सिकुड़ती जगह चिंतित करती है?

शिवदयाल- कविता लिखी तो बहुत जा रही है लेकिन उसे जीवन की लय से जुड़ा रहना है, उसकी सार्थकता इसी बात में है। उसमें आत्मा का स्पंदन हो, वह अंतःकरण का प्रतिबिम्ब हो, तभी वह जीवन में शुभता का संवाहक बन सकती है। इस भूमिका में कविता का कोई स्थानापन्न नहीं हो सकता।

रत्नेश- आप पर जयप्रकाश नारायण के आंदोलन का गहरा प्रभाव रहा। 'एक और दुनिया होती' उपन्यास में बदलाव की बयार के थम जाने पर या उसके दिशाहीन हो जाने का एक रंज दिखाई देता है। राजनीति का वर्तमान रूप व्यथित करता है?

शिवदयाल- राजनीति का अर्थ आज संसदीय राजनीति और उससे भी आगे बढ़कर वोट की राजनीति में सिमट आया है। यह राजनीति समुदाय के विखंडन को ही अपना साध्य मानती है। यह सचमुच व्यथित करने वाला प्रसंग है। भारत और उसकी जीवित सभ्यता के पीछे हमारा महान भारतीय समुदाय है, लाख कमियाँ बताने के बावजूद। उसे बचाना और सुदृढ़ करना आज की सबसे महती आवश्यकता है। जयप्रकाश की लोक शक्ति की

प्रतिष्ठा को इसी अर्थ और पृष्ठभूमि में देखा जाना चाहिए।

रत्नेश मिश्र - यह कहना ठीक होगा कि 'एक और दुनिया होती' में 'मैं' के रूप में आपकी उपस्थिति है?

शिवदयाल- मैं इसे पूरी तरह इनकार नहीं कर सकता। उपन्यास में जो जीवन-स्थितियाँ और घटनाएँ हैं, वे प्रामाणिक हैं, पात्र काल्पनिक भी हो सकते हैं। कथा, आख्यान में कथाकार का साक्षी भाव ही महत्त्वपूर्ण माना जाना चाहिए, न कि भोक्ता भाव। गो कि कथा बुनने में उसका महत्त्व होता है।

रत्नेश मिश्र-आपने बच्चों के लिए बहुत कुछ लिखा है। आप बाल पत्रिका 'किलकारी' का संपादन भी कर रहे हैं। क्या बच्चों की वह पीढ़ी अतीत हो गई है जो कहानियाँ सुनना और पढ़ना चाहती थी या अब वह अभिरुचि डिजिटल कंटेंट की ओर मुड़ गई है?

शिवदयाल- बच्चे आज भी कहानी सुनना चाहते हैं लेकिन मध्यवर्गीय परिवार में अब दादा-दादी, नाना-नानी, चाचा-चाचा जैसे संबंधों का अभाव है। हम जब छोटे थे तो अपने दूर के रिश्तेदारों से भी रात में सोते समय कहानी सुनते थे। वह बात अब शायद नहीं रही। लेकिन जहाँ तक बच्चों की अभिरुचि का सवाल है, बच्चे आज भी बड़े चाव से कहानी सुनते हैं और यह मैंने प्रत्यक्ष अनुभव किया है । जहाँ तक डिजिटल कंटेंट की बात है तो हमारा ध्यान इस ओर भी जाना चाहिए कि देश में एक डिजिटल डिवाइड भी है। जिन बच्चों की पहुँच डिजिटल कंटेंट तक नहीं है, और इनकी संख्या बहुत ज्यादा है, उन्हें हाथ में किसी बाल पत्रिका का होना आज भी आह्लादित करता है।

रत्नेश मिश्र- बिहार पर आपका लेखन है। बिहार की वर्तमान दशा पर क्या सोचते हैं?

शिवदयाल-धर्म, शिक्षा और राज्य-व्यवस्था के क्षेत्र में बिहार का भारत ही नहीं बल्कि विश्व को योगदान अप्रतिम है। यह सदियों से मूल्य निर्माण का क्षेत्र रहा है। वर्तमान राजनीति में बिहार को प्रतिरोध का और प्रयोग का पर्याय बना दिया गया और यह भुला दिया गया कि बिहार की प्रतिभा कितने बड़े पैमाने पर निर्माण में प्रकट हुई थी, जबकि दूसरी ओर राजनीति का स्तर भी गिरता चला गया। आज भी शिक्षा के क्षेत्र में देश का नेतृत्व करने की क्षमता बिहार में है, बशर्ते कि वह क्षुद्र राजनीति से ऊपर उठे। बिहार को बड़े सपनों की जरूरत है, उन्हें पूरा करने वाले तेजस्वी और चरित्रवान लोगों की जरूरत है, केवल गौरवमय अतीत को याद करने से नहीं चलेगा।

रत्नेश मिश्र- साहित्येत्तर लेखन में और क्या करने की योजना है?

शिवदयाल-कुछ विषय हैं भारत के अतीत और भविष्य से जुड़े जिन पर लिखने का मन है। विचार साहित्य जरूरी है और उसका दायरा भी बहुत बड़ा है। निबंधों का एक और संग्रह तैयार है। मैंने जो आलोचनात्मक लेखन किया है उसकी भी पुस्तक लगभग तैयार है। उपन्यास लिखे भी बहुत साल हो गए। उधर भी ध्यान है। काम तो बहुत है, गति उतनी नहीं बन पा रही।

रत्नेश मिश्र- कोई एक ऐसी चीज जो बतौर लेखक समाज/देश में आप बदलते हुए देखना चाहेंगे?

शिवदयाल- कम से कम दो चीजें बहुत जरूरी हैं। ज्ञान के क्षेत्र में धन का दखल नहीं हो, या कम से कम हो - मैं इसे आज और कल की भी बड़ी जरूरत मानता हूँ। दूसरी बात कि हम दलीय लोकतंत्र से वास्तविक लोकतंत्र की ओर बढ़ें, हमारा लोकतंत्र एक नैतिक व्यवस्था के रूप में विकसित हो, तभी स्वराज का स्वप्न फलित होगा। आपने याद किया इसके लिए बहुत धन्यवाद!

विज्ञापन

द्वैमासिक पत्रिका भाषा के आगामी विशेषांक हेतु लेख आमंत्रित हैं।

विषय– भारतीय ज्ञान परंपरा और विज्ञान लेखन

साहित्यमाला ग्रंथ योजना – 2026 हेतु लेख आमंत्रित हैं।

विषय– प्रादेशिक भाषाओं का साहित्येतिहास।

विज्ञापन

निदेशालय के पत्राचार पाठ्यक्रम योजना में हिंदी Certificate, हिंदी Diploma और Advance हिंदी Diploma (सभी एक वर्षीय) में प्रवेश के विज्ञापन हेतु लिंक-

हिंदीतरभाषी क्षेत्र में हिंदी सिखने के इच्छुक लोग इसमें प्रवेश लेने के लिए निम्नलिखित लिंक के माध्यम से आवेदन कर सकते हैं।

https://www.chd.education.gov.in/sites/default/files/

सूचना- 2025-2026.pdf

प्रधान संपादक
प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी

संपादक
डॉ. अनुपम माथुर
डॉ. नूतन पाण्डेय

संपादन सहयोग
श्री प्रदीप कुमार ठाकुर

मुद्रकः केंद्रीय हिंदी निदेशालय

निदेशालय वार्ता में प्रकाशित समाचारो का स्रोत केंद्रीय हिंदी निदेशालय के विभिन्न योजनाओं से प्राप्त सामग्री और सुझाव संपादक के पास भेज सकते हैं।

निदेशालय समाचार का ई–मेलः
bhashaunit@gmail.com

निदेशक, केंद्रीय हिंदी निदेशालय, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित।